

कोविड-19 के संदर्भ में सामाजिक दूरी (शारीरिक दूरी) के प्रभाव : एक विश्लेषण

डॉ० (श्रीमती) अखिलेश

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

जी०एस०एच० (पी०जी०) कालेज,

चान्दपुर (बिजनौर)

Email: akhileshchauhan6699@gmail.com

सारांश

कोविड-19 महामारी के संक्रमण के फैलाव को रोकने के लिए व्यवहारवादी उपागम के अन्तर्गत 'लॉकडाउन', सामाजिक दूरी (शारीरिक दूरी), मास्क लगाना तथा हाथों को सेनेटाइज करने जैसे मानव आधारित उपायों को उपयोग में लाने पर जोर दिया जा रहा है। भारत लॉकडाउन के चारों फेसिस से गुजरकर अनलॉक फेस-1 व लॉकडाउन फेस-5 के मिश्रित स्वरूप तक आ पहुंचा है किन्तु कोविड-19 से सम्बद्ध परिणामी आंकड़े कम भयावह नहीं हैं। विकसित राष्ट्रों की तुलना में भारत की स्थिति तुलनात्मक रूप से संतोषप्रद अवश्य कही जा सकती है। मेरा यह लेख कोविड-19 के संक्रमण के फैलाव को रोकने व बचाव करने के लिए व्यवहारवादी उपागम (Pragmatic Approach) के उपायों में से एक उपाय "शारीरिक दूरी" के सकारात्मक (वरदान) तथा नकारात्मक (अभिशाप) प्रभावों के विश्लेषण पर अभिकेंद्रित है। सूचनाओं का संकलन द्वैतीयक स्रोतों से किया गया है। सम्पूर्ण लेख 24 मार्च-2020 से 03 जून 2020 तक की अवधि की भारत में कोविड-19 की परिणामी स्थितियों का विश्लेषण स्वरूप है। अध्येत्री का मानना है कि कोविड-19 के संदर्भ में 'शारीरिक दूरी' रूपी व्यवहारवादी उपाय ने सकारात्मक (वरदान) और नकारात्मक (अभिशाप) रूपी भूमिकाओं से देश को लाभान्वित भी किया है और क्षति भी पहुंचायी है। अध्येत्री ने प्रस्तुत लेख में सामाजिक दूरी शब्द के स्थान पर 'शारीरिक/भौतिक दूरी' शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि यह शब्द अधिक मानवतावादी है तथा सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अधिक व्यवहारिक एवं उपयुक्त है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी ऐसा ही मानना है।

मुख्य शब्द: सामाजिक दूरी, शारीरिक दूरी, वरदान, अभिशाप सकारात्मक, नकारात्मक, व्यवहारवादी, उपागम, तांडव नृत्य, स्वायत्तता, म्यूटेशन, इम्यून सिस्टम, लॉकडाउन।

प्रस्तावना

कोविड-19 के संकट ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। इसकी प्रभावशीलता को देखते हुए इसे नये समाज का रचियता, (Creator) खेल परिवर्तक,

(Game Changer) महान आपदा अभिकरण, (Great Disaster Agent) किसी फिल्म का हीरो, (Hero of the Picture) तथा अदृश्य सुपर पावर, (Invisible Supreme Power) की संज्ञा दी जाने लगी है, और सम्पूर्ण मानव जगत इसके समक्ष असहाय सा बना नजर आ रहा है। इसमें कोई अतिशयोक्ति भी नहीं है। मानवीय उपायों के बीच कोविड-19 का 'तांडव नृत्य' (विध्वंसकारी रूप) जारी है। कोई भी संस्था इसके प्रभाव से अछूती नहीं है। एक आक्रांता के रूप में इसकी विनाशलीला अविरल जारी है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि व्यवहारवादी उपागम रूपी उपायों (लॉकडाउन, शारीरिक दूरी, मास्क लगाना तथा हाथों व स्थलों को सेनेटाइज करना) को नहीं अपनाया गया होता तो निश्चित ही इसकी विध्वंसता का अनुमान लगाना कठिन था। मैंने इस लेख में शारीरिक दूरी जैसे मानव रूपी प्रयास के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

अध्ययन समस्या

सर्वविदित है कि कोविड-19 के चिकित्सीय अभाव के कारण मानवीय उपायों द्वारा इसके संक्रमण को रोकने का प्रयास विश्व के राष्ट्रों द्वारा किया गया, किन्तु परिणाम अधिक उत्साहवर्धक नजर नहीं आते। 03 जून, 2020 तक विश्व में इस महामारी से 64,53,781 लोग संक्रमित हो चुके हैं। 3,82,507 व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है तथा 30,68,122 लोग संक्रमण के बाद ठीक हो चुके हैं। भारत में इस महामारी से 2,07,615 लोग संक्रमित हुए हैं तथा 1,00,303 संक्रमण के बाद ठीक हो चुके हैं और 58,29 लोगों की इससे मृत्यु हो चुकी है। कुल संक्रमण लोगों की संख्या के आधार पर भारत सातवें पायेदान पर है। 24 मार्च 2020 लॉकडाउन फेस-1 के समय भारत में संक्रमित लोगों की संख्या मात्र 564 थी। विश्व परिदृश्य एवं महामारी की विकटता को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय प्रधानमंत्री जी ने मानवीय उपायों जैसे- लॉकडाउन के साथ सामाजिक दूरी (शारीरिक दूरी) बनाये रखने, मास्क पहनने, व हाथों व स्थलों को सेनेटाइज करने की अपील की। किन्तु वास्तव में क्या हुआ? का परिणाम हमारे सामने हैं। अध्येत्री इस लेख के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास कर रही है कि भारत में इस महामारी को रोकने में मानववादी उपाय 'सामाजिक दूरी' (Social Distancing) अर्थात् शारीरिक दूरी का कितना सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ा है?

उद्देश्य

इस शोध लेख का मुख्य उद्देश्य महामारी कोविड-19 के संदर्भ में 'सामाजिक दूरी' रूपी मानवीय उपाय की दोहरी भूमिका (सकारात्मक व नकारात्मक परिणाम) का विश्लेषण करना है।

शोध विधि

प्रस्तुत लेख मूलतः शोध समस्या की गणनात्मक स्थिति को सामने रखकर इसके गुणात्मक पहलुओं का विश्लेषण करता है। सम्पूर्ण लेख 25 मार्च 2020 (लॉकडाउन-1) से लेकर 03 जून-2020 तक की अवधि में कोविड-19 के संक्रमण रूपी घटित स्थितियों के उद्देश्यपूर्ण निदर्शन व तथ्यों पर आधारित है।

तथ्य संकलन

कोविड-19 के संदर्भ में 'सामाजिक दूरी' शब्द का परिभाषा रूपी संकट बना हुआ है। भारतीय जनमानस 'सोशल डिस्टेंसिंग' को अपने सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में अवलोकित करता है, क्योंकि इसका प्रयोग भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक-सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए होता रहा है। इसमें भेदभाव रूपी मनोदशा को उत्पन्न करने के साथ-साथ 'अस्पृश्यता' जैसी अमानवीय अनुक्रम को जन्म दिया। यह पवित्र और अपवित्र की धार्मिक धारणा का विस्तार है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध समाजशास्त्री **लुई दुमो** ने अपनी पुस्तक "**होमो हायरकिक्स**" में लिखा है- वास्तव में 'सोशल डिस्टेंसिंग' का कोरोना या अन्य बीमारी से कोई सम्बन्ध नहीं है, इसका प्रयोग समाज में शक्ति सम्बन्धों को समझाने के लिए किया जाता है। कोविड-19 के संदर्भ में शारीरिक/सामाजिक दूरी से अभिप्राय "स्वच्छन्द अन्तर्क्रियाओं के समय क्षैतिज दूरी में घनिष्ठता को पनपने से रोकना है।" वैसे इसे व्यक्ति से व्यक्ति की शारीरिक दूरी के रूप में माना जाय तो सामाजिक एवं संक्रमण के फैलाव को रोकने की दृष्टि से अधिक श्रेयकर होगा। अर्थात् अपनी बीमारी न तो किसी को दो और न लो। अधिकांश अध्येताओं का ऐसा ही मानना है।

अध्ययन समस्या की मौलिकता को दृष्टिगत रखते हुए 25 मार्च, 2020 से 03 जून, 2020 तक सूचना के द्वैतीयक स्रोतों जैसे- समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टीवी न्यूज एण्ड अपडेट्स तथा गूगल इंजन से की गयी सर्च से तथ्यों व आंकड़ों का संकलन किया गया है। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन द्वारा संकलित तथ्यों का गुणात्मक विश्लेषण करने के उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त किये हैं।

विश्लेषण

लैंसेट ने 172 अध्ययनों के मेगाडेटा का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला कि कोरोना वाइरस से जुड़ी अन्य सावधानियों का पालन न करने पर इसका खतरा उसी अनुपात में बढ़ जाता है। उन्होंने रिपोर्ट में लिखा है कि एक मीटर से कम सामाजिक (शारीरिक) दूरी रखने पर खतरे का प्रतिशत 12.8 प्रतिशत है जबकि 1.5 मीटर की दूरी होने पर यह मात्र 2.6 प्रतिशत ही रह जाता है। इसी प्रकार मास्क लगाने पर खतरा 3.1 प्रतिशत रहता है जबकि मास्क न लगाने पर यह बढ़कर 17.4 प्रतिशत हो जाता है। उक्त अध्ययन रूपी रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि संक्रमण को कम करने के लिए दो व्यक्तियों के मध्य की शारीरिक दूरी कम से कम 6 फीट (1.5 मीटर) अवश्य रहनी चाहिए।

अध्येत्री द्वारा शोध समस्या पर संकलित समंक विश्लेषण के आधार पर उपलब्धियों को दो स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- (1) वरदान रूपी सकारात्मक प्रभाव और (2) अभिशाप रूपी नकारात्मक प्रभाव।

1. वरदान रूपी सकारात्मक प्रभाव

(i) विश्व स्तर पर कोविड-19 के संक्रमण और उससे होने वाली मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है कि जिन देशों में व्यवहारवादी उपागमों (Pragmatic Approaches) का पालन कड़ाई से किया है वहाँ कोविड-19 संक्रमणरी का प्रभाव तुलनात्मक रूप से कम है। भारत

इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

(ii) जिन प्रान्तों में अथवा शहरों में जनसंख्या घनत्व अधिक है वहाँ शारीरिक दूरी स्थापित करना 'मरीचिका' के समान है। इस कारण ऐसे क्षेत्रों में संक्रमण का स्तर उच्च रहा है और मौतें भी अधिक हुई हैं। महाराष्ट्र का मुम्बई शहर और दिल्ली इसके उदाहरण हैं।

(iii) प्रवासी मजदूरों की एक राज्य से दूसरे राज्य में आवाजाही ने व्यवहारवादी प्रयासों को नकारा है। इसी का यह परिणाम है कि मई-14, 2020 के बाद से कोरोना मीटर निरन्तर बढ़ता जा रहा है। 14 मई 2020 को भारत में कोरोना संक्रमितों की संख्या 98 हजार के लगभग थी जो 2 जून, 2020 को यह 1,98,706 हो गयी। अर्थात् 15 दिनों में यह दोगुना से अधिक हो गयी। परिदृश्य बताते हैं कि इस दौरान शारीरिक दूरी प्रायः शून्य हो गयी थी। इसी का यह प्रतिफल है।

(iv) तब्लीगी जमात में सहभागियों के मध्य शारीरिक दूरी प्रायः शून्य थी इसलिए अधिसंख्य जमाती संक्रमित हुए और उन्होंने कोरोना केरियर के रूप में यात्राएं कर संक्रमण को और विस्तारित किया।

(v) भारत में कोरोना संक्रमण से हुई मौतों की कम संख्या शारीरिक दूरी जैसे व्यवहारवादी उपाय के सकारात्मक प्रभाव या परिणाम को दर्शाती है। मार्च, 11-30, 2020 के दौरान भारत में यह संख्या मात्र 40 थी जो 10-20 मई, 2020 तक (40 दिनों में) 3435 किन्तु 21 मई से 3 जून 2020 तक (मात्र 14 दिनों में) बढ़कर 6088 हो गयी अर्थात् लगभग दो गुना। इसका मुख्य कारण प्रवासी मजदूरों की आवाजाही से शारीरिक दूरी का शून्य हो जाना रहा। इस दौरान पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी भी बड़ी मात्रा में संक्रमित हुए।

(vi) शारीरिक दूरी के अनुपालन की शिथिलता के चलते 3 जून 2020 महाराष्ट्र में सर्वाधिक 2587 मौतें (कुल मौतों का 42.49 प्रतिशत) हुई हैं।

(vii) भारत में संक्रमण से मृत्यु दर 2.82 प्रतिशत है जो विश्व के सम्पन्न राष्ट्रों की तुलना में बहुत कम है। इसे सामाजिक दूरी और लॉकडाउन जैसे व्यवहारवादी उपायों के धरातलीय अनुपालन का परिणाम कहा जा सकता है।

(viii) कोरोना संक्रमित जनसंख्या के आधार पर भारत विश्व में सातवें पायेदान (3 जून, 2020 को) पर है। यह भी व्यवहारवादी उपायों (शारीरिक दूरी) का परिणाम है।

अतः स्पष्ट है कि 'शारीरिक दूरी' जैसे व्यवहारवादी उपायों की व्यवहारिकता ने कोविड-19 के संक्रमण की चैन को तोड़कर इसके विस्तार को कम करने में मदद की है इसी का परिणाम है कि भारत में जनहानि तुलनात्मक रूप से काफी कम रही है।

2. अभिशाप रूपी नकारात्मक प्रभाव

विश्वस्तरीय कोरोना संक्रमण ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के समक्ष अनेक चुनौतियों को जन्म दे दिया। यद्यपि चुनौतियाँ विकास के मार्ग को पशस्त करती हैं किन्तु शारीरिक दूरी रूपी चुनौती ने कुछ ऐसी स्थितियों को जन्म दे दिया है जिनका प्रभाव मानव समाज पर नकारात्मक पड़ रहा है, इन्हें इसका अभिशाप रूपी 'उपउत्पाद' (By product) कहा जा सकता है-

- (i) भारत गरीब लोगों का धनी देश है, जहाँ जनसंख्या आधिक है और अधिकांश जनसंख्या एक या दो कमरों वाले मकानों में निवास करती है। शहरी स्लम बस्तियों में तो जनसंख्या घनत्व भी उच्चतम रहता है। ऐसे में कोरोना संक्रमण से बचाव व फैलाव को रोकने के लिए आवश्यक शारीरिक दूरी कैसे संभव है? इससे सम्बन्धित क्षेत्रों में तनाव का वातावरण निरन्तर बना हुआ है।
- (ii) संक्रमण के क्षैतिज विस्तार को रोकने की दृष्टि से शारीरिक दूरी अपरिहार्य है किन्तु डर इस बात का भी है कि आगे चलकर यह तथाकथित शारीरिक दूरी 'मानवीय विभेद' को जन्म न दे दे। यदि ऐसा होता है तो समाज, वर्गों और उपवर्गों में विभाजित होता चला जायेगा।
- (iii) कोरोना संक्रमण समाप्त होने की कोई अन्तिम तिथि नहीं हैं अध्ययन बताते हैं कि कोरोना वाइरस में स्वयं को म्यूटेशन (परिवर्तित) करने की शक्ति है जिससे यह अपनी बाँयोसंरचना को बदल लेता है। इस कारण कोई 'वेक्सीन' जल्दी से नहीं बन सकती। इस स्थिति के चलते व्यक्ति कब तक 'शारीरिक दूरी' का पालन कर पायेगा? यह स्थिति उसे मानसिक तनाव प्रदान करती है।
- (iv) डॉक्टर **ऐलोबे** कहते हैं कि, "परिस्थितियाँ व्यक्ति के हाथ में नहीं होतीं, वह तो उनके अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार कर सकता है। दोनों ही स्थितियों में व्यक्ति स्वयं को असहज महसूस करता है। असहजता का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कोरोना संक्रमण ने भी लोगों के समक्ष असहज परिस्थितियों (सामाजिक दूरी लॉकडाउन) को विकसित किया है जिनका व्यक्तियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।
- (v) 'स्वायत्तता' मानव जीवन का एक मौलिक अधिकार है जिसमें व्यक्ति को स्वयं पर निर्णय लेने की छूट होती है लेकिन कोरोना संक्रमण ने 'सामाजिक (शारीरिक) दूरी' जैसी व्यवहारिक मानवीय पहल को अनिवार्य बना दिया है। यह अनिवार्यता 'स्वायत्तता पर सीधा प्रहार है जिसके चलते सामाजिक पृथक्करण की स्थिति पैदा हो गयी है। यह मानवीय अधिकार हनन की श्रेणी में आता है।
- (vi) अनिश्चयता, व्यक्ति की सोच, उसकी कार्यक्षमता और सामाजिक सम्बन्धों के प्रति दायित्व की भावना को प्रभावित करती है। कोरोना वाइरस संक्रमण की 'अनिश्चयता' ने यह कार्य बड़े स्तर पर किया है। 'अनिश्चयता' ने 'शारीरिक दूरी' रूपी व्यवहारवादी उपाय के प्रति लोगों में एक प्रकार की हताशा को जन्म दे दिया है। इस हताशा और संक्रमण की अनिश्चयता ने मानवीय सम्बन्धों के प्रति सोच व दायित्व की भावना को ठेस पहुंचायी है तथा शारीरिक कार्य क्षमता को प्रभावित किया है।
- (vii) अध्ययन बताते हैं कि शारीरिक सम्पर्क और स्पर्श के समय हमारे शरीर में ऑक्सीटोनिन नामक हारमोन का स्राव होता है। यह हारमोन मस्तिष्क को संकेत पहुंचाने में मदद भी करता है। लेकिन 'सामाजिक दूरी' का पालन करने से शारीरिक संपर्क नहीं हो सकता, इसलिए इसका स्राव संभव नहीं है। विशेषज्ञ बताते हैं कि मानवीय स्पर्श 'वेगस तंत्रिका को भी उत्तेजित' करता है जो प्रतिरोधी अवसाद (टीआरडी) के उपचार में सहायक होती है इससे तनाव या अवसाद के समय

‘दिल की धड़कन’ नियंत्रित होती है, किन्तु ‘शारीरिक दूरी’ के रहते यह संभव नहीं है। इसका नुकसान व्यक्ति और समाज दोनों को उठाना पड़ रहा है।

(viii) शोधकर्ता **माइकल मर्फी** का मानना है कि मुश्किल परिस्थिति में किसी साथी का सम्पर्क ‘तनाव के एहसास’ को कम करता है और आपके ‘इम्यून सिस्टम’ को बेहतर बनाता है। स्पर्श से स्रावित रसायन ‘ऑक्सीटोसिन’ प्राकृतिक दर्द निवारक का कार्य करता है तथा हमें सन्तुलित करता है। ‘शारीरिक दूरी’ के व्यावहारिक होने पर यह संभव नहीं है। अतः यह इसका नकारात्मक प्रभाव ही कहा जायेगा।

(ix) मानवीय सामाजिक जीवन में ‘उत्तेजना’ का अपना महत्व है। सामूहिक आयोजनों में वैयक्तिक उत्तेजना स्पष्ट दिखाई देती है। उत्तेजना व्यक्तियों में ऊर्जा का संचार करती है जिससे आपसी घनिष्ठता का बोध होने लगता है। ‘शारीरिक दूरी’ को बनाये रखने के लिए ‘सामूहिक आयोजन’ पूर्णतः प्रतिबन्धित रहते हैं इस कारण व्यक्ति उत्तेजना रूपी ऊर्जा संचार प्रक्रिया से वंचित हो जाता है। यह इसके नकारात्मक पक्ष को ही उजागर करता है।

(x) ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ परिवार में संक्रमित व्यक्ति से निर्धारित सामाजिक या शारीरिक दूरी बनाना असंभव होता है इस कारण अन्य सदस्य भी संक्रमित हो जाते हैं। यहाँ यक्ष प्रश्न यह उठता है कि क्या परिजन संक्रमित व्यक्ति के साथ अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लें? या स्वयं को संक्रमित कर लें? दोनों ही स्थितियों में पारिवारिक सम्बन्ध एवं सौहार्द प्रभावित होता है और ऐसे संदर्भों में शारीरिक दूरी कैसे स्थापित हो? यक्ष प्रश्न बन जाता है? इससे पारिवारिक विघटन की स्थिति विकसित हो सकती है।

उक्त बिन्दुओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ‘शारीरिक दूरी’ (Physical Distancing) की अनिवार्यता व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक सम्बन्धों पर अपना नकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कोरोना वाइरस संक्रमण से स्वयं को बचाने तथा इसके संक्रमण विस्तार को रोकने के लिए ‘शारीरिक दूरी’ रूपी मानवीय पहल आवश्यक है। यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र दोनों के लिए ‘वरदान’ भी और कुछ संदर्भों में अभिशाप भी। किन्तु कोरोना वाइरस संक्रमण की भयावयता के चलते शारीरिक दूरी वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है, हम सभी को इसका पालन करना चाहिए। यदि हमने और आपने इसका पालन नहीं किया तो सदा के लिए अपनों से दूर हो सकते हैं? सामाजिक दूरी के अभिशाप रूपी प्रभावों को तो सहन किया जा सकता है किन्तु अपनों से दूर होना नहीं। ‘जान है तो जहान’ किवदन्ती भी तभी चरितार्थ हो सकती है। इसलिए आज ‘एकल’ हो जाइये कल ‘सोशल’ अपने आप हो जाओगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. Dainik Bhaskar, Newspaper, New Delhi.
2. Dainik Bhaskar, app – e paper

3. Rawat Hari Krishna, 1998, Encyclopaedia of Sociology, Rawat Publication, New Delhi,
4. Instagram, geography, April-2020.
5. Louis, Dumont, 1970 : Homo Hierarchicus : the caste system and its implications, London.
6. <https://www.bhaskar.com>
7. <https://www.orfonline.org>>Hindi.
8. <https://www.prabhasakshi.com>
9. m.economictimes.com
10. <https://www.hindi.theprint.in>>opinion.
11. <https://www.twitter.com/DrTedros/Status/>
12. <https://www.twitter.com/Daniel Poldrich/Status/>